

# तुलसी चालीसा

दोहा

श्री तुलसी महारानी, करूँ विनय सिरनाय।  
जो मम हो संकट विकट, दीजै मात नशाय॥

चौपाई 1

नमो नमो तुलसी महारानी।  
महिमा अमित न जाय बखानी॥

चौपाई 2

दियो विष्णु तुमको सनमाना।  
जग में छायो सुयश महाना॥

चौपाई 3

विष्णुप्रिया जय जयति भवानि।  
तिहूँ लोक की हो सुखखानी॥

चौपाई 4

भगवत पूजा कर जो कोई।  
बिना तुम्हारे सफल न होई॥

चौपाई 5

जिन घर तव नहिं होय निवासा।  
उस पर करहिं विष्णु नहिं बासा॥

चौपाई 6

करे सदा जो तव नित सुमिरन।  
तेहिके काज होय सब पूरन॥

चौपाई 7

कातिक मास महात्म तुम्हारा।  
ताको जानत सब संसारा॥

चौपाई 8

तव पूजन जो करैं कुंवारी।  
पावै सुन्दर वर सुकुमारी॥

चौपाई 9

कर जो पूजा नितप्रति नारी।  
सुख सम्पत्ति से होय सुखारी॥

चौपाई 10

वृद्धा नारी करै जो पूजन।  
मिले भक्ति होवै पुलकित मन॥

चौपाई 11

श्रद्धा से पूजै जो कोई।  
भवनिधि से तर जावै सोई॥

चौपाई 12

कथा भागवत यज्ञ करावै।  
तुम बिन नहीं सफलता पावै॥

चौपाई 13

छायो तब प्रताप जगभारी।  
ध्यावत तुमहिं सकल चितधारी॥

चौपाई 14

तुम्हीं मात यंत्रन तंत्रन में।  
सकल काज सिधि होवै क्षण में॥

चौपाई 15

औषधि रूप आप हो माता।  
सब जग में तव यश विख्याता॥

चौपाई 16

देव रिषी मुनि औ तपधारी।  
करत सदा तव जय जयकारी॥

चौपाई 17

वेद पुरानन तव यश गाया।  
महिमा अगम पार नहिं पाया॥

चौपाई 18

नमो नमो जै जै सुखकारनि।  
नमो नमो जै दुखनिवारनि॥

चौपाई 19

नमो नमो सुखसम्पत्ति देनी।  
नमो नमो अघ काटन छेनी॥

चौपाई 20

नमो नमो भक्तन दुख हरनी।  
नमो नमो दुष्टन मद छेनी॥

चौपाई 21

नमो नमो भव पार उतारनि।  
नमो नमो परलोक सुधारनि॥

चौपाई 22

नमो नमो निज भक्त उबारनि।  
नमो नमो जन काज सँवारनि॥

चौपाई 23

नमो नमो जय कुमति नशावनि।  
नमो नमो सब सुख उपजावनि॥

चौपाई 24

जयति जयति जय तुलसी माई।  
ध्याऊँ तुमको शीश नवाई॥

चौपाई 25

निजजन जानि मोहि अपनाओ।  
बिगड़े कारज आप बनाओ॥

चौपाई 26

करूँ विनय मैं मात तुम्हारी।  
पूरण आशा करहु हमारी॥

चौपाई 27

शरण चरण कर जोरि मनाऊँ।  
निशदिन तेरे ही गुण गाऊँ॥

चौपाई 28

करहु मात यह अब मोपर दाया।  
निर्मल होय सकल ममकाया॥

चौपाई 29

माँगूँ मात यह बर दीजै।  
सकल मनोरथ पूर्ण कीजै॥

चौपाई 30

जानूँ नहीं कुछ नेम अचारा।  
छमहु मात अपराध हमारा॥

चौपाई 31

बारह मास करै जो पूजा।  
ता सम जग में और न दूजा॥

चौपाई 32

प्रथमहि गंगाजल मँगवावे।  
फिर सुन्दर स्नान करावे॥

चौपाई 33

चन्दन अक्षत पुष्प चढ़ावे।  
धूप दीप नैवेद्य लगावे॥

चौपाई 34

करे आचमन गंगा जल से।  
ध्यान करे हृदय निर्मल से॥

चौपाई 35

पाठ करे फिर चालीसा की।  
अस्तुति करे मात तुलसा की॥

चौपाई 36

यह विधि पूजा करे हमेशा।  
ताके तन नहीं रहै कलेशा॥

चौपाई 37

करै मास कार्तिक का साधन।  
सोवे नित पवित्र सिध हुई जाहीं॥

चौपाई 38

है यह कथा महा सुखदाई।  
पढ़े सुने सो भव तर जाई॥

समापन दोहा

यह श्री तुलसी चालीसा पाठ करे जो कोय।  
गोविन्द सो फल पावही जो मन इच्छा होय॥